अमोघशिवकवचम्

संस्कृत-साहित्य में कवच-रचना एक अद्‌भुत बात है। इष्टदेव को प्रसन्न करना और उसे अपनी रक्षा के लिये उद्यत करना कवच-स्तोत्रों का मुख्य उद्देश्य है। मुख्य-मुख्य देवताओं के कवच-स्तोत्र मिलते हैं जैसे नारायणकवच, देवीकवच तथा शिवकवच आदि। कवच का अर्थ जिरावख्तर है। जैसे युद्ध में योद्धा कवच पहनकर शत्रु के सब प्रकार के प्रहारों से सुरक्षित रहता है, वैसे ही मनुष्य इन कवच-स्तोत्रों के पढ़ने और उनके मन्त्रों के जप करने से सब संकट-प्रहारों से इष्टदेव की कृपा द्वारा सुरक्षित हो जाता है और जिस विपत्ति में पड़ा हो उससे मुक्त हो जाता है। इस पुस्तक में कुछ कवचों का उल्लेख किया जायगा। सबसे पहले शिवकवच का वर्णन किया जा रहा है।

यह अमोघ शिवकवच परम गोपनीय, अत्यन्त आदरणीय, सब पापों को दूर करनेवाला, सारे अमङ्गलों को, विघ्न-बाधाओं को हरनेवाला, परम पवित्र, जयप्रद और सम्पूर्ण विपत्तियों का नाशक माना गया है। यह परम हितकारी है और सब भयों को दूर करता है। इसके प्रभाव से क्षीणायु, मृत्यु के समीप पहुँचा हुआ महान् रोगी मनुष्य भी शीघ्र नीरोगता को प्राप्त करता है और उसकी दीर्घायु हो जाती है। अर्थाभाव से पीड़ित मनुष्य की सारी दरिद्रता दूर हो जाती है और उसको सुख-वैभव की प्राप्ति होती है। पापी महापातक से छूट जाता है और इसका भक्ति-श्रद्धापूर्वक धारण करनेवाला निष्काम पुरुष देहान्त के बाद दुर्लभ मोक्षपद को प्राप्त होता है।

महर्षि ऋषभ ने इसका उपदेश करके एक संकटग्रस्त राजा को दुःखमुक्त किया था। यह कवच श्रीस्कन्दपुराण के ब्राह्मखण्ड के ब्रह्मोत्तरखण्ड (अध्याय 12/1-33) में पाया जाता है।

पहले विनियोग छोड़कर ऋष्यादिन्यास, करन्यास और हृदयादि अङ्गन्यास करके भगवान् शंकर का ध्यान करें। तदनन्तर कवच का पाठ करें।

विनियोग

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा (किसी-किसी के मत से '**वृषभ**') **ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसदाशिवरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, वं कीलकम्, श्रीं ह्रीं क्लीं बीजम्, सदाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवचस्तोत्रजपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ब्रह्मऋषये नमः, शिरसि।
अनुष्टुप् छन्दसे नमः, मुखे।
श्रीसदाशिवरुद्रदेवतायै नमः, हृदि।
ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः।
वं कीलकाय नमः, नाभौ।
श्रीं ह्रीं क्लीमिति बीजाय नमः, गुह्ये।
विनियोगाय नमः, सर्वाङ्गे।

अथ करन्यासः

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने
ॐ ह्रीं रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने
ॐ नं रीं नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने
ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने
ॐ शिं रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने
ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने
ॐ यं रः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयाद्यङ्गन्यासः

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने
ॐ ह्रीं रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने हृदयाय नमः।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने
ॐ नं रीं नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने शिरसे स्वाहा।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने
ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने शिखायै वषट्।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने
ॐ शिं रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने कवचाय हुम्।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने
ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने
ॐ यं रः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिंदमम्।
सहस्रकरमप्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्।।

ध्यान – जिनकी दाढ़ें वज्र के समान हैं, जो तीन नेत्र धारण करते हैं, जिनके कण्ठ में हलाहल – पान

ऋषभ उवाच

अथापरं सर्वपुराणगुह्यं निःशेषपापौघहरं पवित्रम्।
जयप्रदं सर्वविपद्विमोचनं वक्ष्यामि शैवं कवचं हिताय ते।। (11/65)
नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम्।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम्।। (12/1)
शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम्।। (2)
हृत्पुण्डरीकान्तरसंनिविष्टं स्वतेजसा व्याप्तनभोऽवकाशम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्यायेत् परानन्दमयं महेशम्।। (3)
ध्यानावधूताखिलकर्मबन्धश्चिरं चिदानन्दनिमग्नचेताः।
षडक्षरन्याससमाहितात्मा शैवेन कुर्यात् कवचेन रक्षाम्।। (4)
मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा संसारकूपे पतितं गभीरे।
तन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम्।। (5)

का नील चिह्न सुशोभित होता है, जो शत्रुभाव रखनेवालों का दमन करते हैं, जिनके सहस्रों कर(हाथ अथवा किरणें) हैं तथा जो अभक्तों के लिये अत्यन्त उग्र हैं, उन उमापति शम्भु को मैं प्रणाम करता हूँ।

ऋषभजी कहते हैं – जो सम्पूर्ण पुराणों में गोपनीय कहा गया है, समस्त पापों को हर लेनेवाला है, पवित्र, जयदायक तथा सम्पूर्ण विपत्तियों से छुटकारा दिलानेवाला है, उस सर्वश्रेष्ठ शिवकवच का मैं तुम्हारे हित के लिये उपदेश करूँगा। मैं विश्वव्यापी ईश्वर महादेवजी को नमस्कार करके मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करनेवाले इस शिवस्वरूप कवच का वर्णन करता हूँ। (1)

पवित्र स्थान में यथायोग्य आसन बिछाकर बैठे। इन्द्रियों को अपने वश में करके प्राणायामपूर्वक अविनाशी भगवान् शिव का चिन्तन करे। (2)

'परमानन्दमय भगवान् महेश्वर हृदय – कमल के भीतर की कर्णिका में विराजमान हैं, उन्होंने अपने तेज से आकाशमण्डल को व्याप्त कर रखा है। वे इन्द्रियातीत, सूक्ष्म, अनन्त एवं सबके आदिकारण हैं।' इस तरह उनका चिन्तन करे।(3)

इस प्रकार ध्यान के द्वारा समस्त कर्मबन्धन का नाश करके चिदानन्दमय भगवान् सदाशिव में अपने चित्त को चिरकालतक लगाये रहे। फिर षडक्षरन्यास के द्वारा अपने मन को एकाग्र करके मनुष्य निम्नाङ्कित शिवकवच के द्वारा अपनी रक्षा करे।(4)

सर्वदेवमय महादेवजी गहरे संसार – कूप में गिरे हुए मुझ असहाय की रक्षा करें। उनका दिव्य नाम जो उनके श्रेष्ठ मन्त्र का मूल है, मेरे हृदयस्थित समस्त पापों का नाश करे।(5)

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिर्ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः स ईश्वरः पातु भयादशेषात्।। (6)
यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं पायात् स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः।
योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः।। (7)
कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः।
स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात्।। (8)
प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो विद्यावराभीतिकुठारपाणिः।
चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्रम्।। (9)
कुठारवेदाङ्कुशपाशशूलकपालढक्काक्षगुणान् दधानः।
चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम्।। (10)
कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकावभासो वेदाक्षमालावरदाभयाङ्कः।
त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम्।। (11)
वराक्षमालाभयटङ्कहस्तः सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः।

सम्पूर्ण विश्व जिनकी मूर्ति है, जो ज्योतिर्मय आनन्दघनस्वरूप चिदात्मा हैं; वे भगवान् शिव मेरी सर्वत्र रक्षा करें। जो सूक्ष्म से भी अत्यन्त सूक्ष्म हैं, महान् शक्ति से सम्पन्न हैं, वे अद्वितीय 'ईश्वर' महादेवजी सम्पूर्ण भयों से मेरी रक्षा करें।(6)

जिन्होंने पृथ्वीरूप से इस विश्व को धारण कर रखा है, वे अष्टमूर्ति 'गिरिश' पृथ्वी से मेरी रक्षा करें। जो जलरूप से जीवों को जीवनदान दे रहे हैं, वे 'शिव' जल से मेरी रक्षा करें।(7)

जो विशद लीलाविहारी 'शिव' कल्प के अन्त में समस्त भुवनों को दग्ध करके (आनन्द से) नृत्य करते हैं, वे 'कालरुद्र' भगवान् दावानल से, आँधी-तूफान के भय से और समस्त तापों से मेरी रक्षा करें।(8)

प्रदीप्त विद्युत् एवं स्वर्ण के सदृश जिनकी कान्ति है, विद्या, वर और अभय(मुद्राएँ) तथा कुल्हाड़ी जिनके कर-कमलों में सुशोभित हैं, चतुर्मुख त्रिलोचन हैं, वे भगवान् 'तत्पुरुष' पूर्व दिशा में निरन्तर मेरी रक्षा करें।(9)

जिन्होंने अपने हाथों में कुल्हाड़ी, वेद, अङ्कुश, फंदा, त्रिशूल, कपाल, डमरू और रुद्राक्ष की माला को धारण कर रखा है तथा जो चतुर्मुख हैं, वे नीलकान्ति त्रिनेत्रधारी भगवान् 'अघोर' दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा करें।(10)

कुन्द, चन्द्रमा, शंख और स्फटिक के समान जिनकी उज्ज्वल कान्ति है; वेद, रुद्राक्षमाला, वरद और अभय (मुद्राओं) से जो सुशोभित हैं; वे महाप्रभावशाली चतुरानन एवं त्रिलोचन भगवान् 'सद्योजात' पश्चिम दिशा में मेरी रक्षा करें।(11)

जिनके हाथों में वर एवं अभय(मुद्राएँ), रुद्राक्षमाला और टाँकी विराजमान हैं तथा

त्रिलोचनश्चारुचतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः।। (12)
वेदाभयेष्टाङ्कुशपाशटङ्ककपालढक्काक्षकशूलपाणिः।
सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मामीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः।। (13)
मूर्द्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलिर्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः।
नेत्रे ममाव्याद् भगनेत्रहारी नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः।। (14)
पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः कपोलमव्यात् सततं कपाली।
वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः।। (15)
कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहुर्वक्षःस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात्।। (16)
ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी।
हेरम्बतातो मम पातु नाभिं पायात् कटी धूर्जटिरीश्वरो मे।। (17)
ऊरूद्वयं पातु कुबेरमित्रो जानुद्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात्।
जङ्घायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात् पादौ ममाव्यात् सुरवन्द्यपादः।। (18)
महेश्वरः पातु दिनादियामे मां मध्ययामेऽवतु वामदेवः।

कमल–किञ्जल्क के सदृश जिनका गौर वर्ण है, वे सुन्दर चार मुखवाले त्रिनेत्रधारी भगवान् 'वामदेव' उत्तर दिशा में मेरी रक्षा करें।(12)

जिनके कर–कमलों में वेद, अभय और वर(मुद्राएँ), अंकुश, टाँकी, फंदा, कपाल, डमरू, रुद्राक्षमाला और त्रिशूल सुशोभित हैं, जो श्वेत आभा से युक्त हैं, वे परम प्रकाशरूप पञ्चमुख भगवान् 'ईशान' मेरी ऊपर से रक्षा करें।(13)

भगवान् 'चन्द्रमौलि' मेरे सिर की, 'भालनेत्र' मेरे ललाट की, 'भगनेत्रहारी' मेरे नेत्रों की और 'विश्वनाथ' मेरी नासिका की सदा रक्षा करें।(14)

'श्रुतिगीतकीर्ति' मेरे कानों की, 'कपाली' निरन्तर मेरे कपोलों की, 'पञ्चमुख' मुख की तथा 'वेदजिह्व' जीभ की रक्षा करें।(15)

'नीलकण्ठ' महादेव मेरे गले की, 'पिनाकपाणि' मेरे दोनों हाथों की, 'धर्मबाहु' दोनों कंधों की तथा 'दक्षयज्ञविध्वंसी' मेरे वक्षःस्थल की रक्षा करें।(16)

'गिरीन्द्रधन्वा' मेरे पेट की, 'कामदेव के नाशक' मध्यदेश की, 'गणेशजी के पिता' मेरी नाभि की तथा 'धूर्जटि' मेरी कटि की रक्षा करें।(17)

'कुबेरमित्र' मेरी दोनों जाँघों की, 'जगदीश्वर' दोनों घुटनों की, 'पुङ्गवकेतु' दोनों पिंडलियों की और 'सुरवन्द्यचरण' मेरे पैरों की रक्षा करें।(18)

'महेश्वर' दिन के पहले पहर में मेरी रक्षा करें। 'वामदेव' मध्य पहर में मेरी रक्षा करें। 'त्र्यम्बक'

त्रियम्बकः पातु तृतीययामे वृषध्वजः पातु दिनान्त्ययामे।। (19)
पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे।
गौरीपतिः पातु निशावसाने मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम्।। (20)
अन्तःस्थितं रक्षतु शङ्करो मां स्थाणुः सदा पातु बहिः स्थितं माम्।
तदन्तरे पातु पतिः पशूनां सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात्।। (21)
तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः।
वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवः शयानम्।। (22)
मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः।
अरण्यवासादिमहाप्रवासे पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः।। (23)
कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोपः स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः।
घोरारिसेनार्णवदुर्निवारमहाभयाद् रक्षतु वीरभद्रः।। (24)
पत्त्यश्वमातङ्गघटावरूथसहस्रलक्षायुतकोटिभीषणम्।
अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां छिन्द्यान्मृडो घोरकुठारधारया।। (25)

तीसरे पहर में और 'वृषभध्वज' दिन के अन्तवाले पहर में मेरी रक्षा करें।(19)

'शशिशेखर' रात्रि के आरम्भ में, 'गङ्गाधर' अर्धरात्रि में, 'गौरीपति' रात्रि के अन्त में और 'मृत्युञ्जय' सर्वकाल में मेरी रक्षा करें।(20)

'शङ्कर' घर के भीतर रहने पर मेरी रक्षा करें। 'स्थाणु' बाहर रहने पर मेरी रक्षा करें। 'पशुपति' बीच में मेरी रक्षा करें और 'सदाशिव' सब ओर से मेरी रक्षा करें।(21)

'भुवनैकनाथ' खड़े होने के समय, 'प्रमथनाथ' चलते समय, 'वेदान्तवेद्य' बैठे रहने के समय और 'अविनाशी शिव' सोते समय मेरी रक्षा करें।(22)

'नीलकण्ठ' रास्ते में मेरी रक्षा करें। 'त्रिपुरारि' शैलादि दुर्गों में और उदारशक्ति 'मृगव्याध' वनवासादि महान् प्रवासों में मेरी रक्षा करें।(23)

जिनका प्रबल क्रोध कल्पों का अन्त करने में अत्यन्त पटु है, जिनके प्रचण्ड अट्टहास से ब्रह्माण्ड काँप उठता है, वे 'वीरभद्रजी' समुद्र के सदृश भयानक शत्रुसेना के दुर्निवार महान् भय से मेरी रक्षा करें।(24)

भगवान् 'मृड' मुझ पर आततायीरूप से आक्रमण करनेवालों की हजारों, दस हजारों, लाखों और करोड़ों पैदलों, घोड़ों और हाथियों से युक्त अति भीषण सैकड़ों अक्षौहिणी सेनाओं का अपनी घोर कुठारधार से भेदन करें।(25)

निहन्तु दस्यून् प्रलयानलार्चिर्ज्वलत् त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य।
शार्दूलसिंहर्क्षवृकादिहिंस्रान् संत्रासयत्वीशधनुः पिनाकम्।। (26)
दुःस्वप्नदुश्शकुनदुर्गतिदौर्मनस्यदुर्भिक्षदुर्व्यसनदुस्सहदुर्यशांसि।
उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्तिव्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः।। (27)

(ब्रा. ख. ब्र. ख. 12/1-27)

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सकलतत्त्वविहाराय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे सकललोकैकगुरवे सकललोकैकसाक्षिणे सकल-निगमगुह्याय सकलवरप्रदाय सकलदुरितार्त्तिभञ्जनाय सकलजगदभयंकराय सकल-लोकैकशङ्कराय शशाङ्कशेखराय शाश्वतनिजाभासाय निर्गुणाय निरुपमाय नीरूपाय निराभासाय निरामयाय निष्प्रपञ्चाय निष्कलङ्काय निर्द्वन्द्वाय निस्सङ्गाय निर्मलाय निर्गमाय नित्यरूपविभवाय निरुपमविभवाय निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्तप्रकाशतेजोरूपाय जय जय महारुद्र महारौद्र भद्रावतार दुःखदावदारण महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव कपालमालाधर खट्वाङ्गखड्गचर्मपाशाङ्कुशडमरुशूलचाप-बाणगदाशक्तिभिन्दिपालतोमरमुसलमुद्गरपट्टिशपरशुपरिघभुशुण्डीशतघ्नीचक्राद्यायुध-भीषणकर सहस्रमुख दंष्ट्राकराल विकटाट्टहासविस्फारितब्रह्माण्डमण्डलनागेन्द्रकुण्डल

भगवान् 'त्रिपुरान्तक' का प्रलयाग्नि के समान ज्वालाओं से युक्त जलता हुआ त्रिशूल मेरे दस्युदल का विनाश कर दे और उनका पिनाक धनुष चीता, सिंह, रीछ, भेड़िया आदि हिंस्र जन्तुओं को संत्रस्त करे। (26)

वे जगदीश्वर मेरे बुरे स्वप्न, बुरे शकुन, बुरी गति, मन की दुष्ट भावना, दुर्भिक्ष, दुर्व्यसन, दुस्सह अपयश, उत्पात, संताप, विषभय, दुष्ट ग्रहों की पीड़ा तथा समस्त रोगों का नाश करें। (27)

ॐ जिनका वाचक है, सम्पूर्ण तत्त्व जिनके स्वरूप हैं, जो सम्पूर्ण तत्त्वों में विचरण करनेवाले, समस्त लोकों के एकमात्र कर्ता और सम्पूर्ण विश्व के एकमात्र भरण-पोषण करनेवाले हैं, जो अखिल विश्व के एक ही संहारकारी, सब लोकों के एकमात्र गुरु, समस्त संसार के एक ही साक्षी, सम्पूर्ण वेदों के गूढ़ तत्त्व, सबको वर देनेवाले, समस्त पापों और पीड़ाओं का नाश करनेवाले, सारे संसार को अभय देनेवाले, सब लोकों के एकमात्र कल्याणकारी, चन्द्रमा का मुकुट धारण करनेवाले, अपने सनातन-प्रकाश से प्रकाशित होनेवाले, निर्गुण, उपमारहित, निराकर, निराभास, निरामय, निष्प्रपञ्च, निष्कलङ्क, निर्द्वन्द्व, निस्सङ्ग, निर्मल, गति-शून्य, नित्यरूप, नित्य-वैभव से सम्पन्न, अनुपम ऐश्वर्य से सुशोभित, आधारशून्य, नित्य-शुद्ध-बुद्ध, परिपूर्ण, सच्चिदानन्दघन, अद्वितीय तथा परम शान्त, प्रकाशमय, तेजःस्वरूप हैं, उन भगवान् सदाशिव को नमस्कार है। हे महारुद्र, महारौद्र, भद्रावतार, दुःख-दावाग्नि-विदारण, महाभैरव, कालभैरव, कल्पान्तभैरव, कपालमालाधारी! हे खट्वाङ्ग, खड्ग, ढाल,

नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वेश्वर विश्वरूप वृषभवाहन विषभूषण विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्यु– भयमपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चोरभयं मारय मारय मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वाङ्गेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः संताडय संताडय रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्डवेतालमारीगणब्रह्म– राक्षसान् संत्रासय संत्रासय ममाभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामाश्वासयाश्वासय नरकभयान्मामु– द्धारयोद्धारय संजीवय संजीवय क्षुत्तृड्भ्यां मामाप्याययाप्यायय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते।

फंदा, अंकुश, डमरू, त्रिशूल, धनुष, बाण, गदा, शक्ति, भिन्दिपाल, तोमर, मुसल, मुद्गर, पट्टिश, परशु, परिघ, भुशुण्डी, शतघ्नी और चक्र आदि आयुधों के द्वारा भयंकर हाथोंवाले! हजार मुख और दंष्ट्रा से कराल, विकट अट्टहास से विशाल ब्रह्माण्ड–मण्डल का विस्तार करनेवाले, नागेन्द्र वासुकि को कुण्डल, हार, कङ्कण तथा ढाल के रूप में धारण करनेवाले, मृत्युञ्जय, त्रिनेत्र, त्रिपुरनाशक, भयंकर नेत्रोंवाले, विश्वेश्वर, विश्वरूप में प्रकट, बैल पर सवारी करनेवाले, विष को गले में भूषणरूप में धारण करनेवाले तथा सब ओर मुखवाले शङ्कर! आपकी जय हो, जय हो! आप मेरी सब ओर से रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये। प्रज्ज्वलित होइये, प्रज्वलित होइये। मेरे महामृत्यु–भय का तथा अपमृत्यु के भय का नाश कीजिये, नाश कीजिये। (बाहरी और भीतरी) रोग–भय को जड़ से मिटा दीजिये, जड़ से मिटा दीजिये। विष और सर्प के भय को शान्त कीजिये, शान्त कीजिये। चोरभय को मार डालिये, मार डालिये। मेरे (काम–क्रोध –लोभादि भीतरी तथा इन्द्रियों के और शरीर के द्वारा होनेवाले पापकर्मरूपी बाहरी) शत्रुओं का उच्चाटन कीजिये, उच्चाटन कीजिये; त्रिशूल के द्वारा विदारण कीजिये, विदारण कीजिये; कुठार के द्वारा काट डालिये, काट डालिये; खड्ग के द्वारा छेद डालिये, छेद डालिये; खट्वाङ्ग के द्वारा नाश कीजिये, नाश कीजिये; मुसल के द्वारा पीस डालिये, पीस डालिये और बाणों के द्वारा बींध डालिये, बींध डालिये। (आप मेरी हिंसा करनेवाले) राक्षसों को भय दिखाइये, भय दिखाइये। भूतों को भगा दीजिये, भगा दीजिये। कूष्माण्ड, वेताल, मारियों और ब्रह्मराक्षसों को संत्रस्त कीजिये, संत्रस्त कीजिये। मुझको अभय दीजिये, अभय दीजिये। मुझ अत्यन्त डरे हुए को आश्वासन दीजिये, आश्वासन दीजिये। नरक–भय से मेरा उद्धार कीजिये, उद्धार कीजिये। मुझे जीवन–दान दीजिये, जीवन–दान दीजिये। क्षुधा–तृषा का निवारण करके मुझको आप्यायित कीजिये, आप्यायित कीजिये। आपकी जय हो, जय हो। मुझ दुःखातुर को आनन्दित कीजिये, आनन्दित कीजिये। शिवकवच से मुझे आच्छादित कीजिये, आच्छादित कीजिये। त्र्यम्बक सदाशिव! आपको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है।

ऋषभ उवाच

इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया।
सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम्।। (28)
यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवं कवचमुत्तमम्।
न तस्य जायते क्वापि भयं शम्भोरनुग्रहात्।। (29)
क्षीणायुर्मृत्युमापन्नो महारोगहतोऽपि वा।
सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति।।(30)
सर्वदारिद्र्यशमनं सौमङ्गल्यविवर्धनम्।
यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते।। (31)
महापातकसंघातैर्मुच्यते चोपपातकैः।
देहान्ते शिवमाप्नोति शिववर्मानुभावतः।। (32)
त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम्।
धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो ह्यवाप्स्यसि।। (12/33)

इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां तृतीये ब्रह्मोत्तरखण्डे अमोघशिवकवचं सम्पूर्णम्।

ऋषभजी कहते हैं – इस प्रकार यह वरदायक शिवकवच मैंने कहा है। यह सम्पूर्ण बाधाओं को शान्त करनेवाला तथा समस्त देहधारियों के लिये गोपनीय रहस्य हैं।(28)

जो मनुष्य इस उत्तम शिवकवच को सदा धारण करता है, उसे भगवान् शिव के अनुग्रह से कभी और कहीं भी भय नहीं होता। जिसकी आयु क्षीण हो चली है, जो मरणासन्न हो गया है अथवा जिसे महान् रोगों ने मृतक-सा कर दिया है, वह भी इस कवच के प्रभाव से तत्काल सुखी हो जाता और दीर्घायु प्राप्त कर लेता है। शिवकवच समस्त दरिद्रता का शमन करनेवाला और सौमङ्गल्य को बढ़ानेवाला है, जो इसे धारण करता है, वह देवताओं से भी पूजित होता है। इस शिवकवच के प्रभाव से मनुष्य महापातकों के समूहों और उपपातकों से भी छुटकारा पा जाता है तथा शरीर का अन्त होने पर शिव को पा लेता है। वत्स! तुम भी मेरे दिये हुए इस उत्तम शिवकवच को श्रद्धापूर्वक धारण करो, इससे तुम शीघ्र और निश्चय ही कल्याण के भागी होओगे। (29-33)

(उपर्युक्त शिवकवच के पाठों में अन्तर पाया जाता है। उदाहरण के लिये गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित 'शिवांक' के पृ. 135-136 पर जो पाठ दिया गया है, उससे भिन्न उपर्युक्त पाठ है। उपर्युक्त 'अमोघशिवकवचम्' का अर्थसहित सम्पूर्ण पाठ गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित 'अमोघ शिवकवच' से लिया गया है।)

❁❁❁❁❁❁